मनु मथुरा, दिलि दुवारिका, काया मंझि कासी,
चेतनु वसे चित में, अलखु अबिनासी,
पेही ड्रिसे पाण में, को विरलो वेसासी,
वञी थिए वासी, बेहदि बेगम पुरि जो.

सामी साहब कहते हैं, ''अलख, अविनाशी और चेतन तत्त्व (परमेश्वर) तो हमारे चित्त में ही निवास करता है। इसलिए मनुष्य का मन ही मथुरा है, उसका दिल (मन) ही द्वारका है और काया (शरीर, देह) में ही काशी तीर्थस्थान स्थित है। यह तथ्य कोई विरला विश्वासी मनुष्य ही अपने मन में झाँक कर देखता है। ऐसा ही अंतर्ज्ञानी मनुष्य बेगमपुर (परलोक) का निवासी बन कर परमेश्वर का सानिध्य प्राप्त करता है।

सर्वेश्वर, चेतन-तत्त्व, परमेश्वर मनुष्य के चित्त में भी स्थित रहता है। यह अंतरात्मा चर्म-चक्षुओं से दिखाई नहीं देता। परमात्मा का समूचा ज्ञान होना जरूरी है। यह समूचा/समग्र ज्ञान क्या है? इसका अर्थ यह है कि ज्ञान और विज्ञान, इन दो स्तरों पर परमात्मा को जानने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। हम यह मान कर चलते हैं कि इस चराचर सृष्टि में परमेश्वर का अस्तित्व है। किन्तु यह एक सतही, ऊपरवाली बात हो गयी। इससे परमेश्वर की प्रतीति नहीं होती। विज्ञान का अर्थ है, हमारी इंद्रियों को विश्व के दृश्य स्वरूप का ज्ञान, जिसमें असीम विविधता, विचित्रता, परिवर्तनशीलता एवं आकार-भिन्नता आदि दिखायी देती है। विश्व की इस विविधता का ज्ञान अथवा विश्व-ज्ञान ही 'विज्ञान' है। अब प्रश्न है कि 'ज्ञान' क्या है? मराठी संत समर्थ रामदास स्वामीजी के शब्दों में कहें, तो

ओळखावे आपणासी आपण । या नाव ज्ञान ।।

अर्थात् अपने आप को, स्वयं को पहचानना 'ज्ञान' है। स्व-स्वरूप को पहचाना जरूरी हैं। हमें, हमारे शरीर को जीवित रखने वाली चेतना हमारे अंदर है। इस चेतना के कारण हमारे एक स्वभाव है, भाव-भावना है, विचार-विकार है। इस चेतना या आत्मा को पहचानना ही ज्ञान है। अर्थात् आत्म-ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। यह ज्ञान होना अनिवार्य है। परमेश्वर हमारे अंदर ही है, उसे बाह्य पदार्थों में ढूँढने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। यही तथ्य सामीजी ने हमारे सामने रखने का प्रयत्न किया है। संत कबीर कहते हैं-

मोको कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में,
ना मैं देवल, ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।

■